

केरल हिन्दी रीडर

3

केरल सरकार केलिए
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास द्वारा
लिखित

१९६०

केरल हिन्दी रीडर–३

KERALA HINDI READER—3



केरल सरकार केलिए

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास द्वारा लिखित

 [*Price*: *75 nP.*

1961

राष्ट्र-वंदना

जन गण मन अधिनायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता !
पंजाब सिंध गुजरात मराठा
द्राविड़ उत्कल वंगा,
विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा,
उच्छल जलधि-तरंगा ;
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे ;
गाहे तव जय गाथा,
जन गण मंगलदायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता,
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे !

इस पुस्तक के बारे में

'केरल हिन्दी रीडर' माला की यह तीसरी रीडर है। यह केरल राज्य के स्कूलों में हिन्दी की पढ़ाई के लिए पाठ्यक्रम के अनुसार खास तौर पर लिखी गयी है

इस पुस्तक के लिखने में सावधानी से चुने हुए शब्दों की सहायता से एक सरल व्याकरण-प्रणाली का अनुसरण किया गया है। निर्दिष्ट विषयों पर आसान पाठ बड़े ही रोचक ढ़ंग से तैयार किये गये हैं। हर एक पाठ के अंत में नमूने के तौर पर अभ्यास-पाठ भी दिये गये हैं।

शिक्षाविभाग,
केरल सरकार।

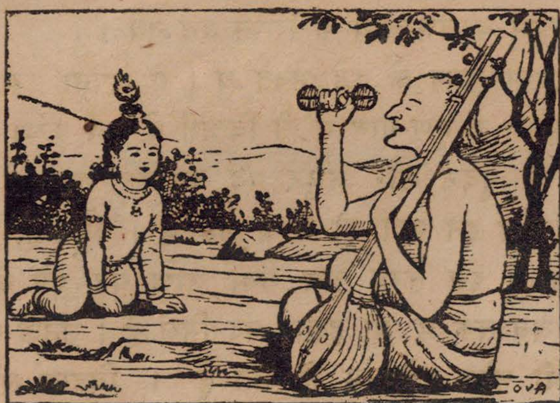
पाठ-सूची

केरल हिन्दी रीडर—३

पाठ १ (एक)

भक्त सूरदास

सूरदास हिन्दी के बड़े कवि थे। तुलसीदास के बाद उन्हींका नाम लिया जाता है। सूरदास का जन्म १४८३ ई० में आगरा-मथुरा सड़क के किनारे रुनकता नाम के गाँव में हुआ था। उनके पिता का



नाम रामदास था। कुछ लोग कहते हैं कि ये जन्म से ही अंधे थे। और कुछ लोग कहते हैं कि संसार से विरक्त होकर उन्होंने अपनी आँखें फोड़ डालीं।

बचपन से ही सूरदास भगवान कृष्ण के बड़े भक्त थे। जब सूरदास की उम्र आठ साल की थी तब उनके माता-पिता भगवान के दर्शन के लिए मथुरा गये। सूरदास भी उनके साथ थे। दर्शन करने के बाद माता-पिता घर लौटने लगे। तब सूरदास ने कहा—"अब मैं यहीं रहूँगा।" यह सुनकर माता-पिता बड़े दुखी हुए। उन्होंने लड़के को बहुत समझाया, पर सब बेकार हुआ। अन्त में सूरदास को भगवान के भरोसे पर छोड़कर वे वापस चले गये।

सूरदास मथुरा में साधुओं की संगति में रहने लगे। वे महाप्रभु वल्लभाचार्य के शिष्य बन गये।

सूरदास कृष्ण के बड़े भक्त थे। वे अपना सारा समय कृष्ण के गुण-गान में ही बिताते थे। वे कृष्ण की लीला के सुंदर और मधुर पद बनाकर गाते थे। उनके शिष्य इन पदों को लिख लेते थे। कहते हैं, कि सूरदास ने इस तरह कुल सवा लाख पद रचे थे। लेकिन अब तक छः ही हज़ार पद मिले हैं। उनके पद आज भी लोग बड़े प्रेम से गाते हैं। विद्वान लोग सूरदास को हिन्दी साहित्य को सूर्य समझते हैं।

सूरदास ब्राह्मण थे। मगर जाति-पाँति के कारण किसी को छोटा या बड़ा नहीं समझते थे। उनका विचार

था कि जो भगवान की भक्ति करता है, वही बड़ा है । इस तरह उन्होंने अपना सारा समय हरि-भजन में बिताकर अस्सी साल की अवस्था में शरीर छोड़ा

अभ्यास

१· इन शब्दों से एक-एक वाक्य बनाओ--

जन्म से, फोड़ डालना, दर्शन, भरोसा, अवस्था ।

२· जवाब दो--

(१) सूरदास का जन्म कहाँ हुआ ?

(२) सूरदास कैसे आदमी थे ?

(३) सूरदास मथुरा में क्या करते थे ?

(४) विद्वान लोग सूरदास के बारे में क्या कहते हैं ?

(५) सूरदास ने क्या रचना की ?

३· सूरदास के बारे में दस वाक्य लिखो

पाठ २ (दो)

समय पर की सूझ

रात का समय था। अंधेरा फैल गया था। एक चोर चोरी करने अपने घर से निकला। वह एक गली में पहुँचा। वहाँ उसने एक बड़ा मकान देखा। उसने सोचा कि यह किसी अमीर का घर है. जरूर ही यहाँ मुझे बहुत धन मिलेगा। चोर चुपके से उस मकान में घुस गया।

वह एक साहूकार का घर था। साहूकार और उसकी पत्नी दोनों सो रहे थे। चोर के चलने की आहट हुई। साहूकार जाग उठा। उसकी स्त्री भी उठी। दोनों बहुत डर गये। घर में नौकर-चाकर कोई नहीं था।

साहूकार चालाक था। उसे एक उपाय सूझ गया। उसने अपनी पत्नी से पूछा—"मैं कल रुपयों की थैला लाया था, उसको तुमने कहाँ रखा?"

साहूकार की पत्नी होशियार थी। वह साहूकार के इस सवाल का मतलब समझ गयी। उसने जवाब दिया— "कोठरी के अंदर उस पुरानी अलमारी में रखी है।'

चोर ने उन दोनों की बातचीत सुनी। वह बहुत खुश हुआ। उसने समझा कि इन लोगों ने मुझे नहीं देखा, और रुपये की थैली कहां रखी है, इसका भी पता लग गया। वह धीरे से कोठरी के अन्दर गया। उसने जल्दी से अलमारी को खोला और उसके अंदर हाथ डाला।



अलमारी पुरानी थी। उसके अन्दर शहद की मक्खियों ने छत्ता बना रखा था। चोर का हाथ उसपर पड़ा, तो छत्ता हिला। मक्खियां छत्ते से निकलीं। वे गुस्से में आकर चोर के हाथ और मुंह पर डंक मारने लगीं। वह दर्द से तड़पने लगा और बड़े ज़ोर से चिल्लाया—"हाय रे मरा, हाय रे मरा!"

चोर का चिल्लाना सुनकर पड़ोस के लोग आ पहुँचे और उसको पकड़कर थाने में ले गये ।

अभ्यास

१. जवाब दो—

(१) साहूकार कैसा आदमी था ?
(२) उसने अपनी पत्नी से क्या कहा ?
(३) उसकी पत्नी कैसी औरत थी ?
(४) उसने साहूकार को क्या जवाब दिया ?
(५) अलमारी में क्या था ?

२. खाली जगहों को भरो—

(१) चोर —से उस मकान में — — ।
(२) चोर के चलने — —हुई ।
(३) वह साहूकार के — का मतलब — — ।
(४) —ने उन दोनों की बातचीत — ।
(५) मक्खियाँ उसके हाथ और मुँह पर — — लगीं ।

३. साहूकार ने चोर को कैसे पकड़ा ?

पाठ ३ (तीन)

बाज़ार

श्याम—राम, तुम कहाँ जा रहे हो ?

राम—मैं बाज़ार जा रहा हूँ। कुछ चीज़ें ख़रीदनी हैं।

श्याम—अच्छा, चलो, मुझे भी कुछ चीज़ें ख़रीदनी हैं। मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ।

(दोनों बाज़ार पहुंचते हैं।)

राम—यह देखो, यहाँ कितनी भीड़ है! कितने लोग आ-जा रहे हैं! फेरीवाले और खोंचेवाले भी बहुत हैं।

श्याम—आओ, आगे चल। देखो, यहाँ तरह-तरह की दूक़ानें सजी हुई हैं। ये पनसारियों की दूकानें हैं। यहाँ नमक, मिर्च, मसाला, चाय, शक्कर—सब तरह की चीज़ें मिलती हैं। दूसरी तरफ़ गेहूँ, जौ, चना, मटर आदि के ढेर लगे हैं। आओ, चने का भाव पूछें। भाई, चना किस भाव देते हो?

व्यापारी—डेढ़ पड़ी एक रुपये दो आने।

श्याम—अच्छा, एक पड़ी का क्या दाम हुआ ?

व्यापारी—एक पड़ी का दाम बारह आना हुआ।

राम—(श्याम के कान में) माताजी ने कहा है व्यापारी जितना पैसा माँगेगा उसका आधा ही देना।

राम—यह बात है तो तुम कुछ भी खरीद न सकोगे। अच्छा, आगे चलो, और भी सस्ता मिलेगा।

(दोनों आगे बढ़ते हैं।)

राम—यह देखो, तरकारियाँ—बैंगन, केले, भिंडी टमाटर आदि यहाँ बिक रहे हैं।



श्याम—अजी, टमाटर का क्या दाम है ?

व्यापारी—आधा रुपया सेर, कहो कितना दूँ ?

श्याम—दाम ज्यादा बता रहे हो ?

व्यापारी—देखो, टमाटर एकदम ताज़े हैं। अभी-अभी बगीचे से तोड़ लाया हूँ।

श्याम—दाम और कम करोगे ?

व्यापारी—कितना दोगे ?

श्याम—छः आने ।

व्यापारी—अच्छा, लाओ थैली। (तराजू लेकर तोलता है।)

श्याम—पाँच रुपये का नोट है। रेजगी है तुम्हारे पास ?

व्यापारी—मेरे पास रेजगी नहीं है; कहीं से भुनाकर लाओ।

(राम और श्याम आगे बढ़ते हैं।)

राम—मिठाईवाले की दूकान कहाँ है ? बहन के लिए मुझे कुछ मिठाई खरीदनी है।

श्याम—यहाँ है मिठाई की दूकान।

राम—मिठाई क्या भाव है ?

मिठाईवाला—आपको कौन-सी मिठाई चाहिए ?

राम—पेड़े क्या भाव हैं ?

मिठाई०—पेड़े दो रुपये सेर।

राम—और जिलेबी ?

मिठाई०—जिलेबी रुपये के ड़ेढ़ सेर।

राम—जिलेबी सस्ती मालूम होती है. ऐसा क्यों ?

मिठाई०—भाई, जिलेबी डालडा की बनी है ।

राम—क्या आप घी की जिलेबी नहीं बेचते ?

मिठाई०—भाई, आजकल बाज़ार में अच्छा घी नहीं मिलता । खराब घी से तो डालडा ही अच्छा है । खाकर देखो, कितनी बढ़िया जिलेबी है !

राम—अच्छा, मुझे एक रुपये की जिलेबी तौल दो ।

(दोनों कपड़े की दूकान पर पहुँचते हैं ।)

राम—देखो, यहाँ लिखा है—'एक रुपये को एक आना कमीशन ।'

श्याम—(दूसरी दूकान की ओर देखकर) और वहाँ लिखा है कि बिक्री टैक्स नहीं लिया जाएगा

राम—इस दूकान में कमीशन क्यों देते हैं

श्याम—यहाँ हाथ-करघे के कपड़े बिकते हैं । उसके लिए सरकार टैक्स नहीं लेती । ऐसे कपड़ा के प्रचार के लिए दाम कम करके बेचने का प्रबंध है । बुनकरों की बेकारी दूर करने के लिए सरकार ने ऐसा प्रबंध किया है । हमको भी करघे के कपड़े ही खरीदने चाहिए ।

भ्यास

१. जवाब दो--

(१) पनसारियों की दूकानों में क्या-क्या चीज़ें मिलती हैं ?

(२) तुम्हें कौन-सी तरकारी पसंद है ?

(३) किस तरह के कपड़े पर टैक्स नहीं लगाया जाता है ; और क्यों ?

(४) आजकल चावल क्या भाव मिलता है ?

(५) हमें कौन-सा कपड़ा खरीदना चाहिए ?

२. वाक्य बनाओ--

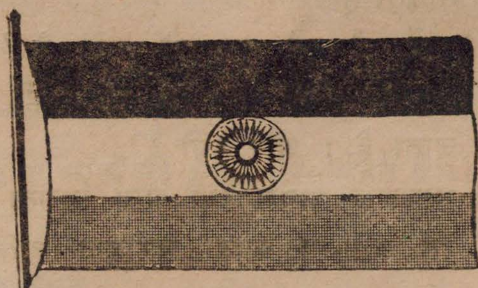
आगे, सजाना, तोताज़ा, लना, बिकना, बेकारी, प्रबंध ।

३. उल्टे शब्द लिखो--

सस्ता, आगे, ताज़ा, ज्यादा, बेच ।

पाठ ४ (चार)

भारत का झंडा



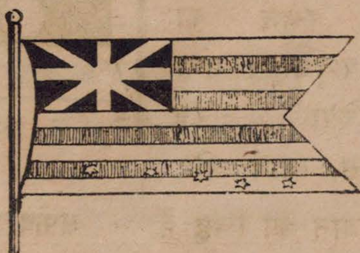
मैं भारत का झंडा हूं । मुझे राष्ट्रीय झंडा कहते हैं । मेरा स्थान भारत में सबसे ऊंचा है । मुझे देखकर हर भारतीय के मन में जोश भर जाता है और श्रद्धा बढ़ जाती है ।

मेरे अभिमान ही देश का अभिमान है । मेरी रक्षा ही देश की रक्षा है । मेरे अभिमान को रक्षा के लिए हज़ारों लोगों ने लाठियाँ सही, जेल गये, अनशन किया । हर दम उनका यही नारा था––"झंडा ऊंचा रहे हमारा ! "

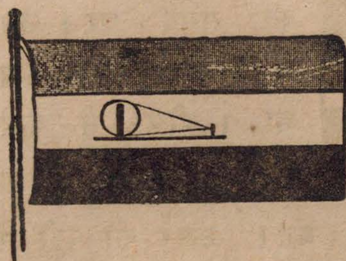
तुम मेरी कहानी सुनोगे ? अच्छा, सुनो--"मेरा जन्म सन् १९०६ में हुआ। वह स्वदेशी-आन्दोलन का समय था। उस समय मेरा रंग अजीब था। बीच में 'वन्दे मातरम्' लिखा रहता था। ऊपर की पट्टी मे सात नक्षत्रों के चिह्न और सबसे नीचे की पट्टी म सूर्य आर चन्द्र के चिह्न थे।



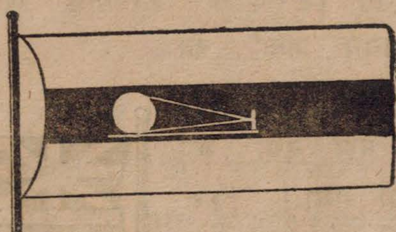
सन् १९१६ में 'होमरूल' आन्दोलन के समय 'यूनियन जैक' का निशाना भी मिला कर मुझे नया रूप दिया गया। फिर सन् १९२१ को महात्मा गांधीजी के प्रयत्न से मेरा रूप निश्चित हो गया। इस नये रूप के कारण मेरी प्रतिष्ठा बहुत बढ़ गयी, मेरी वन्दना सब जगह होने लगी।



सन् १९३१ तक मेरा रूप था--लाल, हरा और सफ़ेद, बीच में चर्खा।



दुश्मन मेरा यह रूप देखकर थर-थर काँपने लगे। मुझे फहराना राजद्रोह ठहराया गया। फिर भी मौत का सामना करते हुए कितने ही नौजवान मेरी मान-रक्षा के लिए दौड़ आये। सन् १९३१ आगस्त को लाल रंग के बदले केसरिया रंग रखने का और हरा रंग नीचे रखने का निर्णय हुआ। मेरा केसरिया रंग साहस, त्याग और



बलिदान का चिह्न है। सफ़ेद रंग शांति और सत्य का चिह्न है और हरा विश्वास और वीरता का। सफ़ेद रंग की पट्टी पर नीले रंग का चर्खा है। यह चर्खा आशा और समृद्धि का चिह्न है।

सन् १९४२ के 'भारत छोड़ो!' आन्दोलन में मैं देश के कोने-कोने तक पहुंच गया। देश के लिए सबसे बड़ा त्याग करने की शक्ति मैंने जनता को दी। देश स्वतंत्र हो गया। नेता लोगों ने सन् १९४७ को मुझे अपने हृदय पर अशोक-चक्र धारण करने का सौभाग्य दिया। इस चक्र को देखकर महान सम्राट् अशोक की याद आती है। अशोक संसार में शाँति चाहते थे। उनका चक्र अहिंसा, त्याग और शाँति का चिह्न है। जहाँ-जहाँ मैं जाऊँगा, इन संदेशों को फैलाऊँगा।

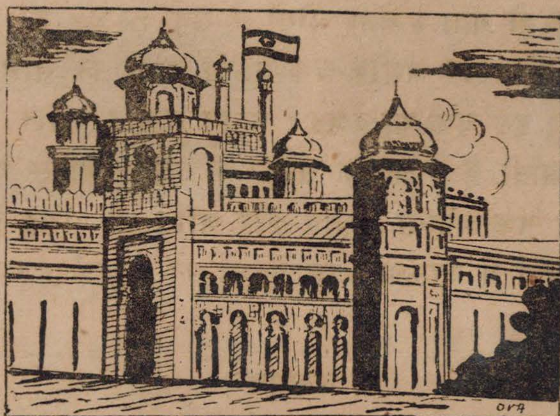
अभ्यास

जवाब दो—

१. झंडे की रक्षा के लिए लोगों ने क्या-क्या किया?
२. स्वदेशी आंदोलन कब शुरू हुआ?
३. शुरू में हमारे झंडे का रूप क्या था?
४. गांधीजी ने उसका रूप कैसे बदल दिया?
५. आज हमारे झंडे का रूप कैसा है?

पाठ ५ (पाँच)

भारत की राजधानी



अध्यापक—लड़को, हमारे देश की राजधानी दिल्ली है। यह बहुत पुराना शहर है। राम! तुमको मालूम है, इसका पुराना नाम क्या था?

राम—जी हाँ, मुझे पिताजी ने बताया कि पांडवों के ज़माने में इसका नाम इंद्रप्रस्थ था।

अध्यापक—ठीक है, यहीं युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ किया था। बहादुर पृथ्वीराज चौहान की राजधानी भी यहीं थी; वह हिन्दुओं का अन्तिम सम्राट् था। मुगलों ने भी इसी को अपनी राजधानी बनाया। उनके समय में

इसका नाम दिल्ली पड़ा। जब अंग्रेज़ों का राज शुरू हुआ, तो उन्होंने यहाँ नयी दिल्ली बसायी।

गोपाल—मास्टरजी, तब पुरानी दिल्ली भी है क्या ?

अध्यापक—है; दिल्ली के दो भाग हैं, एक पुरानी और दूसरी नयी। पुरानी दिल्ली के बाज़ार और गलियाँ तंग हैं, इमारतें भी बहुत पुरानी हैं। यह यमुना नदी के किनारे है। यहाँ "लाल क़िला" है।

गोपाल—लाल क़िला किसने बनवाया, मास्टरजी ?

अध्यापक—मुगल बादशाह शाहजहाँ ने इसे बनवाया। यह लाल पत्थरों से बनवाया गया है। अच्छा, हमारे राष्ट्रपिता का नाम तुम लोगों ने सुना होगा न ?

सब—जी हाँ, महात्मा गाँधीजी।

अध्यापक—हाँ, पूज्य गाँधीजी की समाधि भी यमुना के किनारे है। उस स्थान को राजघाट कहते हैं। आज यह बड़ा पवित्र तीर्थ बन गया है।

माधव—मास्टरजी, नयी दिल्ली में देखने लायक क्या-क्या हैं ?

अध्यापक—नयी दिल्ली में राष्ट्रपति का भवन और बगीचा देखने लायक हैं। वहीं केन्द्र सरकार के दफ्तर हैं। भारत की विधान-सभा की भवन भी वहाँ हैं। वहाँ लोक सभा और राज्य सभा की बैठक होती हैं।

61|4689

अभ्यास

१. जवाब दो—

(१) पुरानी दिल्ली कैसी है ?
(२) नयी दिल्ली किसने बसायी ?
(३) वहाँ क्या-क्या देखने लायक़ हैं ?
(४) दिल्ली का पुराना नाम क्या है ?
(५) राजघाट किसे कहते हैं ?

२. खाली जगहों को भरो—

(१) यहीं पर युधिष्ठिर ने राजसूय— —था।
(२) अंग्रेज़ों ने नयी दिल्ली—।
(३) मुगल—शाहजहाँ ने इसे—।
(४) नयी दिल्ली में राष्ट्रपति का भवन— —है।
(५) गांधीजी की—यमुना नदी के—है।

———

पाठ ६ (छः)

फूलों सा हँसूँ

चाहे चमके किरण सुनहली,
चाहे हो काली बरसात,
हँसूँ हमेशा हृदय खोलकर
हँसूँ खुशी से मैं दिन-रात।

जैसे ओस-बिंदु लूँ सिर पर
वैसे ओलों की बौछार ;
उठकर हँसूँ, हँसूँ गिरकर मैं,
सभी दशा में हँसूँ अपार।

सुख में हँसूँ, हँसूँ दुख में मैं.
सुख-दुख यों हो एक समान ;
फूलों-सा हँसनेवाला यह
जीवन दो मुझको भगवान !

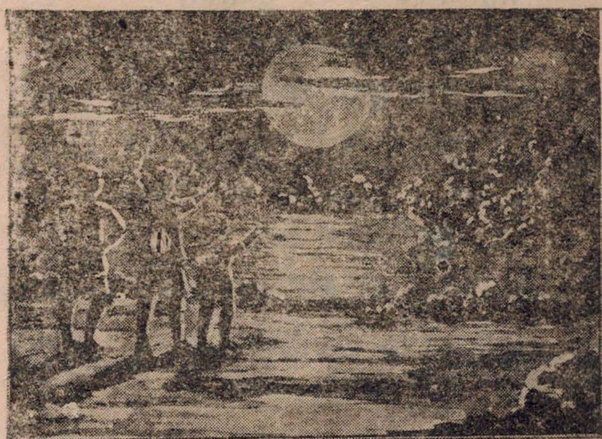
--सोहनलाल द्विवेदी

अभ्यास

१. यह पद्य ज़बानी सुनाओ।
२. भगवान से कवि की प्रार्थना क्या है ?

पाठ ७ (सात)

चाँद



देखो ! आसमान में चाँद कैसा साफ़ चमकता है ! धूप में गरमी होती है, पर चाँदनी में ठंढाई होती है। आज पूर्णिमा है। पूर्णिमा की रात में शाम से सबेरे तक चाँदनी रहती है। चाँदनी की रात में लड़के-लड़कियाँ तरह-तरह के खेल खेलते हैं।

कल रात को पूरा चाँद दिखायी न देगा। यह थोड़ा घट जाएगा। सात दिन के बाद आधा चाँद ही रह जाएगा। फिर पंद्रहवें दिन वह बिलकुल दिखायी नहीं देगा। उस दिन को अमावास्या कहते है।

पंद्रह दिन के बाद नया चाँद निकलेगा। नया चाँद धनुष की तरह होता ह। उस दिन से चाँद हर रात को बढ़ता हुआ मालूम होता है। इस तरह बढ़ते-बढ़ते फिर पंद्रहवें दिन पूरा हो जाता है। जब चाँद घटता रहता है, उन पंद्रह दिनों को कृष्णपक्ष कहते हैं और जब बढ़ने लगता है, तब शुक्लपक्ष कहते हैं। अमावास्या के दिन चाँद बिलकुल दिखायी नहीं देता है और पूर्णिमा क दिन वह रात-भर आसमान में चमकता रहता है।

भारत में कुछ लोगों के महीने नये चाँद से शुरू होते हैं। मुसलमान लोगों का भी महीना नये चाँद से ही शुरू होता है।

पूर्णिमा को लोग पवित्र दिन मानते हैं और उस दिन कोई न कोई त्योहार मनाया जाता है। इसमें चैत्र, वैशाख, आषाढ़, श्रावण, कार्तिक, माघ इन महीनों की पूर्णिमाएँ बहुत मुख्य हैं।

केरल में "तिरुवातिरा" एक बहुत बड़ा त्योहार है। यह भी पूर्णिमा के दिन ही हाता है। उस दिन स्त्रियाँ रात-भर भजन गाती हैं।

अभ्यास

१. जवाब दो—

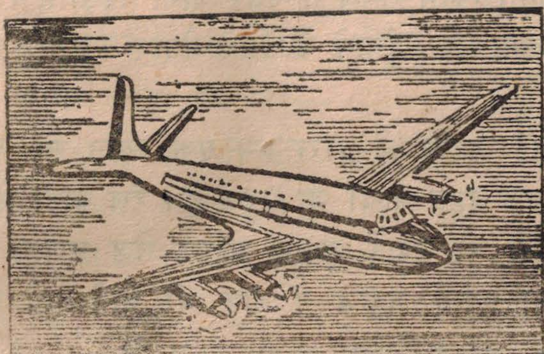
(१) कब चाँदनी शाम से सबेरे तक रहती है ?
(२) किस दिन को अमावास्या कहते हैं ?
(३) 'तिरुवातिरा' कब हाता है ?
(४) मुसलमानों का महीना कब से शुरू होता है ?
(५) कृष्ण पक्ष किसे कहते हैं ?

२. खाली जगहों को भरो—

(१) धूप में—होती है और चाँदनी में—होती है ।
(२) सात दिन के बाद— —ही रह जाएगा ।
(३) जब चाँद बढ़ने लगता है तब—कहते हैं ।
(४) कुछ लोगों के महीने— —से शुरू होते हैं ।
(५) उस दिन—रात-भर—गाती हैं ।

पाठ ८ (आठ)

हवाई जहाज़



तुमने आकाश में हवाई जहाज़ को उड़ते देखा होगा। तुमको मालूम है, भारत में यह कहाँ बनता है? बेंगलूर में हवाई जहाज़ का एक कारखाना है। इसमें कई तरह के हवाई जहाज़ बनते हैं। इनके नमूने प्रदर्शिनियों में तुम देख सकते हो।

हवाई जहाज़ दो प्रकार के हैं। एक तो यात्रियों को एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जानेवाला है। इसमें यात्रियों की सुविधा के लिए सब प्रकार का प्रबंध रहता है।

दूसरा हवाई जहाज़ लड़ाई में काम देता है। इसमें 'बम' आदि लड़ाई का सामान ले जाने का प्रबंध रहता है। यह बड़ा मज़बूत होता है।

हवाई जहाज़ों पर बेतार के तार का भी प्रबंध रहता है। आकाश में उड़ते समय इंजन खराब हो सकता है। कभी-कभी किसी जंगल में उतर जाना पड़ता है। उस समय समाचार पहुँचाने के लिए बेतार का तार काम आता है।

हवाई जहाज़ के द्वारा हम एक स्थान से दूसरे स्थान तक बहुत जल्दी जा सकते हैं। रेल गाड़ी से या जहाज़ से भी हवाई जहाज़ अधिक तेज़ चलता है। आजकल हवाई जहाज़ से डाक भी आने-जाने लगी है।

हवाई जहाज़ से हानि भी हो सकती है। युद्ध के समय दुश्मन हवाई जहाज़ से बम गिराते हैं। इससे देश का बड़ा नुक़सान होता है। बड़ी-बड़ी इमारतें ढह जाती है। खेत नष्ट हो जाते हैं। नगर बरबाद हो जाते हैं। आदमी मर जाते हैं। इसलिए अन्न और कपड़े की कमी पड़ जाती है। कई ज़रूरी चीज़ों के न मिलने से बड़ा अकाल पड़ जाता है।

अभ्यास

१. जवाब दो—

(१) भारत में हवाई जहाज़ का कारखाना कहाँ है ?

(२) हवाई जहाज़ कितनी तरह के होते हैं ?

(३) हवाई जहाज़ में बेतार के तार का प्रबंध क्यों होता है ?

(४) हवाई जहाज़ से क्या फ़ायदे होते हैं ?

(५) हवाई जहाज़ से क्या हानियां हो सकती हैं ?

२. खाली जगहों को भरो—

(१) इसमें यात्रियों की—के लिए— — का प्रबंध रहता है।

(२) आजकल हवाई जहाज़ से — भी आने-जाने — है।

(३) — के समय दुश्मन हवाई जहाज़ से बम — —।

(४) दूसरा हवाई जहाज़ लड़ाई में — — है।

(५) — में हवाई जहाज़ का कारखाना है।

पाठ ९ (नौ)

सर आइसक न्यूटन

बहुत ही कम ऐसे लाग होंगे, जो सर आइसक न्यूटन का नाम नहीं जानते हो । न्यूटन ने ही भूमि की आकर्षण-शक्ति का पहले पहल पता लगाया था । वे गणित और विज्ञान के बड़े पंडित थे । बचपन से ही उन्हें हर एक



बात का कारण जानने की धुन रहती थी । जब कभी वे कोई साधारण बात भी देखते, तो सोचने लगते कि ऐसा क्यों हाता है । उनमें एक सच्चे वैज्ञानिक की लगन थी ।

एक दिन की बात है। न्यूटन एक बगीचे में बैठे हुए थे। अचानक कुछ आवाज़ हुई। उन्होंने सिर उठाया, तो देखा कि एक सेब पेड़ से नीचे गिर रहा है। कोई दूसरा होता, तो इस विषय पर बिलकुल ध्यान न देता। सोचता कि यह तो मामूली बात है।

लेकिन न्यूटन को हर एक बात की वजह जानने की धुन लगी हुई थी। वे सोचने लगे—"अच्छा, यह सेब नीचे ही क्यों गिरा; ऊपर क्यों नहीं उड़ा? सेब ही नहीं, दूसरी चीज़ें भी हमेशा नीचे की ओर ही आती हैं। ऊपर की ओर क्यों नहीं जातीं? ज़रूर इसका कोई न कोई कारण होगा।"

सोचते-साचते न्यूटन को ऐसा लगा कि ज़रूर ज़मीन में कोई न कोई ऐसी शक्ति है जो सब चीज़ों को अपनी ओर खींचती है। नहीं तो हर एक चीज़ ज़मीन पर नहीं गिरती।

इस तरह न्यूटन ने आविष्कार किया कि आसमान के सभी ग्रह-तारे एक दूसरे को अपनी ओर खींचते हैं और जो जितना बड़ा होता है उसका खिंचाव उतना ही अधिक होता है। इसी खिंचाव को आकर्षण-शक्ति कहते हैं।

अगर न्यूटन इस आकर्षण-शक्ति का पता नहीं लगाते, तो विज्ञान की इतनी उन्नति कभी नहीं हो पाती। इसलिए महान वैज्ञानिक न्यूटन की तारीफ़ आज भी लोग करते हैं।

अभ्यास

१. जवाब दो—

(१) सर आइसक न्यूटन कौन थे ?

(२) सेब को गिरते देख न्यूटन ने क्या सोचा ?

(३) उन्होंने कौन-सा आविष्कार किया ?

(४) न्यूटन के आविष्कार से दुनिया को क्या फ़ायदा हुआ ?

२. वाक्य बनावो—

पता लगाना, धुन, अचानक उन्नति, कभी-कभी।

पाठ १० (दस)

भक्त ध्रुव

राजा उत्तानपाद के दो रानियाँ थीं। बड़ी रानी का नाम सुनीति था और छोटी का नाम सुरुचि। राजा छोटी रानी को बहुत चाहता था। छोटी रानी के एक बेटा था जिसका नाम था उत्तम। बड़ी रानी के भी एक बेटा था जिसका नाम ध्रुव था।



एक दिन राजा उत्तम को गोद में लिये सिहासन पर बैठा था। बालक ध्रुव भी वहाँ आ पहुँचा। वह अपने

बाप की गोद में बैठने के लिए आगे बढ़ा। पर राजा ने उसकी ओर बिलकुल ध्यान नहीं दिया। उत्तम की माँ सुरुचि वहाँ खड़ी थी। उसने बालक ध्रुव से कहा—"चल, हट यहाँ से। मेरा पुत्र ही सिंहासन पर बैठ सकता है। तुझे इसपर बैठने का अधिकार नहीं।"

सुरुचि की बात सुनकर ध्रुव को बहुत दुख हुआ। वह अपनी माँ के पास जाकर फूट-फूट कर रोने लगा।

सुनीति ने पूछा—"बेटा, तू क्यों रोता है।"

ध्रुव ने सब हाल माँ को कह सुनाया। तब सुनीति ने कहा—"बेटा, तू ईश्वर का भजन कर, वही तेरी मदद करेगा। उसकी दया से सब कुछ हो सकता है।"

ध्रुव ने माँ की बात सुनकर वन में जाकर तपस्या करने का निश्चय किया। दूसरे ही दिन वह वन को रवाना हुआ। सबने उसको रोका, मगर उसने नहीं माना।

रास्ते में बालक ध्रुव को नारद मुनि मिले। मुनि ने भी उसको घर लौट जाने के लिए बहुत समझाया। मगर ध्रुव अपने निश्चय पर अटल रहा।

जंगल में जाकर ध्रुव ने कठिन तप किया। ईश्वर ने प्रसन्न होकर उसको सुखी और दीर्घायु होने का वर

दिया । वह घर लौट आया, तो उसके पिता ने प्यार से उसे गले से लगा लिया और सारा राजपाट उसे दे दिया । छोटी माँ सुरुचि भी उसे बहुत प्यार करने लगी ।

अभ्यास

१. जवाब दो—

(१) उत्तम और ध्रुव कौन थे ?
(२) ध्रुव अपने बाप के पास क्यों गया ?
(३) सुरुचि ने उससे क्या कहा ?
(४) सुनीति ने ध्रुव से क्या कहा ?
(५) ध्रुव ने जंगल में जाकर क्या किया ?
(६) ईश्वर ने उसका क्या वर दिया ?

२. वाक्यों में प्रयोग करो—

गोद, बिलकुल, मदद, मानना, समझाना, अटल रहना ।

३. खाली जगहों को भरो—

(१) छोटी रानी—एक बेटा था ।
(२) वह अपने बाप की गोद में बैठने केलिए— —।
(३) तुझे इसपर — का — नहीं ।
(४) सबने उसको — मगर उसने नहीं —।
(५) जंगल में ध्रुव ने कठिन — —।

पाठ ११ (ग्यारह)

राणा रणजीतसिंह

क्या रणजीतसिंह का नाम तुमने सुना है ? वे सिक्खों के राजा थे। वे पढ़े-लिखे न थे । तो भी वे बड़े बुद्धिमान थे। वीरता में उनकी बराबरी कोई नहीं कर सकता था। दुश्मन उनका नाम सुनकर कांपते थे। अंग्रेज़ भी उनसे बहुत डरते थे।



एक बार रणजीतसिंह के राज्य में अकाल पड़ा। ग़रीब लोग खाने के लिए तरसने लगे। सारी प्रजा बहुत दुखी हुई। राजा को पहले से ही अकाल पड़ने

का संदेह हो रहा था। उन्होंने देश-देश से अनाज मंगाकर रख दिया था। वे मुफ्त में ग़रीबों को अनाज बाँटने लगे।

उस समय की एक घटना है। एक बूढ़ा था। वह बड़ा ग़रीब था। उसका जवान बेटा मर गया था। उसका पोता ज़िन्दा था, वह अभी लड़का ही था। बूढ़ा उसे लेकर राजमहल में गया। वहाँ उसको बहुत अनाज मिला। मगर वह उसे उठा न सका। वहाँ एक सरदार खड़ा था। उसने बूढ़े से कहा—"चलो, मैं उठाकर लाता हूं।"

बूढ़े के घर अनाज लेकर सरदार आगे-आगे चला और बूढ़ा पीछे-पीछे। सरदार अनाज बूढ़े के घर पहुंचाकर चलने लगा, तो बूढे ने आशीर्वाद दिया "राजा तुमको ऊंचा पद दें।"

सरदार हँसा, पर कुछ कहा नहीं। कुछ देर में पड़ोस के लोग वहाँ आये। उन्होंने कहा—"तुम्हारा अनाज ले आनेवाला वह सरदार रणजीतसिंह ही थे।"

यह सुनकर बूढ़े को बड़ा पश्चात्ताप हुआ। उसने सोचा—"इतने बड़े आदमी से मैंने कुली का काम लिया। मैं कैसा मूर्ख हूं!"

61|4689

सच है, आदर्श राजा हमेशा अपनी प्रजा की भलाई का ही ख्याल रखते थे; इसीलिए प्रजा भी उनपर जान देती थी। राणा रणजीतसिंह भी ऐसे ही राजाओं में थे।

अभ्यास

जवाब दो—

(१) राणा रणजीतसिंह कौन थे।
(२) वे कैसे आदमी थे?
(३) अकाल पड़ने पर राजा ने क्या किया?
(४) बूढ़े को राजा के यहाँ से क्या मिला?
(५) किसने बूढ़े की मदद की?
(६) रणजीतसिंह ने बूढ़े की मदद कैसे की?

पाठ १२ (बारह)

सफ़ाई सुख का मूल है

यह एक तालाब है। इसमें एक तरफ़ कुछ जानवर पानी पी रहे हैं। दूसरी तरफ़ धोबी कपड़े धो रहे हैं। उधर देखो, दो लड़के नहा रहे हैं। उनको खूब तैरना आता है। एक आदमी पानी में बैल को नहला रहा है।



इस तालाब में पानी ज्यादा नहीं है। इसमें पानी बहुत कम है; कीचड़ ही अधिक है। इसमें पानी कहाँ से आता है? जब पानी बरसता है तब आसपास का पानी बहकर इस तालाब में आता है। पानी के साथ गाँव-भर का मैल भी बहकर आ जाता है। क्या यह पानी साफ़ है? नहीं, यह तो गंदा पानी है।

पहले इसका पानी साफ़ था, लेकिन बाद को यह गंदा हो गया। क्यों? जानवर इसमें नहाते हैं। धोबी इसमें कपड़े धोते हैं और वर्षा के पानी के साथ बहुत-सा मैल भी आ जाता है। इसलिए इसका पानी गंदा हो गया है। कई लोग इस गंदे पानी में नहाते हैं। इसी कारण से वे बीमार पड़ते हैं।

गंदे पानी में नहाना बुरा है। जानवरों को भी ऐसा पानी पिलाना बुरा है। हमको तालाब का पानी साफ़ रखना चाहिए। तालाब के चारों तरफ़ का स्थान भी साफ़-सुथरा रखना चाहिए। ऐसा काम नहीं करना चाहिए जिससे पानी गंदा हो जाए। जो अपने ग़ाँव को साफ़-सुथरा रखता है वही देश का सच्चा सेवक है।

अभ्यास

१. जवाब दो—

(१) तालाब में पानी कैसे आता है?

(२) तालाब का पानी क्यों गंदा रहता है?

(३) लोग क्यों बीमार पड़ते हैं?

(४) सच्चा सेवक कौन है?

(५) तालाब का पानी साफ़ रखने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

२. वाक्य बनाओ—

आसपास, बीमार, साफ़-सुथरा, सच्चा, चारों तरफ़।

३. खाली जगहों को भरो—

(१) दूसरी तरफ़—कपड़े धो — —।

(२) कुछ — तैर रहे हैं।

(३) — के पानी के साथ बहुत सा —भी आ जाता है।

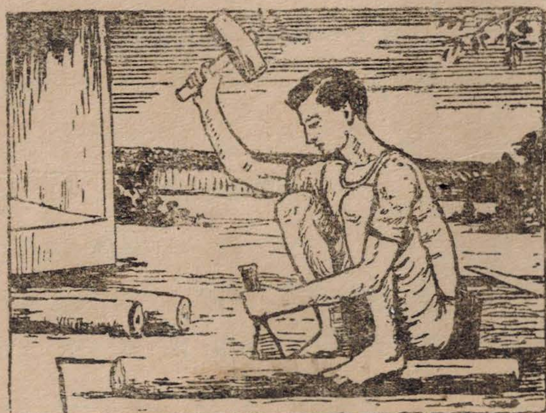
(४) — पानी में नहाना — है।

(५) तालाब का पानी साफ़ रखना —।

पाठ १३ (तेरह)

बढ़ई

गोपाल एक बढ़ई है। वह हमारे मुहल्ले में रहता है। वह लकड़ी का काम करता है। उसीने हमारे घर के दरवाज़े और चौखटें बनायी हैं। वह बड़ा मेहनती है। सबेरे से शाम तक वह अपने काम में लगा रहता है। उसके लड़के उसकी सहायता करते हैं। उसके पास लकड़ी काटने के बहुत-से औज़ार हैं। वह अपने औज़ार खूब तेज़ रखता है।



गोपाल मेज़, कुर्सी और बेंच बनाता है। वह छोटे-मोटे सब काम करता है। जब किसी की चारपाई टूट जाती है तब गोपाल उसे ठीक कर देता है। जब किसी

के घर का किवाड़ या चौखट ठीक करना है, तो गोपाल बुलाया जाता है।

एक दिन हमीद की गाड़ी का पहिया सड़क पर ही टूट गया था। वह आकर गोपाल को बुला ले गया। गोपाल ने थोड़ी देर में पहिये को ठीक कर दिया।

हमारे यहाँ का शिव-मंदिर पुराना हो गया था। उसकी मरम्मत गोपाल ने ही की। इसी तरह दो वर्ष पहले एक मसजिद की भी मरम्मत उसने की थी। अब वह ईसाई पादरियों के एक नये स्कूल में चीजें बना रहा है। वह जाति-पाँति के कारण किसीसे घृणा नहीं करता। वह सबका काम प्रेम से कर देता है। अगर वह न होगा, तो हमारे बहुत-से काम रुक जाएँगे। कौन बच्चों के पालने ठीक करेगा? कौन हमारी कुर्सी-चारपाई बनाएगा?

गोपाल बढ़ई बड़ा ईमानदार आदमी है। वह जो काम करता है, ठीक तरह से करता है। हमें गोपाल का आदर करना चाहिए। मेहनत करके जीवन बितानेवाले सबका आदर हमें करना चाहिए। उनको कभी छोटा नहीं समझना चाहिए।

अभ्यास

१. जवाब दो—

(१) गोपाल क्या काम करता है ?

(२) उसने हमीद की कौन-सी मदद की ?

(३) ईसाइयों के लिए वह क्या बना रहा है ?

(४) अगर बढ़ई न होगा, तो हमें क्या हानि होगी?

(५) हमें किनका आदर करना चाहिए ?

२. वाक्य बनाओ—

मेहनती, टूटना, मरम्मत, घृणा, आदर, ठीक करना ।

३ खाली जगहों को भरो—

(१) उसीने हमारे घर के—और चौखटें — हैं ।

(२) जब—किवाड़ या — ठीक करना है, तो गोपाल — जाता है ।

(३) कौन बच्चों — — ठीक करेगा ?

(४) — गोपाल का — करना चाहिए ।

पाठ १४ (चौदह)

प्रभाती

आती है पूरब स लाली,
गाती हैं चिडियाँ मतवाली,
हल लेकर चल पड़े कृषक भी
बीज खेत में उनको बोना ;
उठ जाओ तुम छोड़ बिछौना !

देखो कहती पवन सुहानी,
उठ जा निद्रा के अभिमानी;
उगता-उगता सूरज कहता
समय नहीं आलस में खोना ;
उठ जाओ अब छोड़ बिछौना !

जो उठकर अब काम करेंगे
आगे वे आराम करेंगे,
श्रम से हर कठिनाई मिटती,
श्रम से मिट्टी बनती सोना ;
उठ जाओ अब छोड़ बिछौना !

—श्री आशाकान्त

पाठ १५ (पन्द्रह)

नागरिकता

मान लो, तुम अकेले हो, कोई दोस्त तुमसे नहीं मिलता, तुमसे कोई बातचीत नहीं करता, तब तुमको कैसे लगेगा ? तुमको तकलीफ़ होगी न ? इसलिए तुम अपने मित्रों और रिस्तेदारों के साथ मिल-जुलकर रहना चाहते हो न ?

आदमी मिल-जुलकर रहना ही पसंद करते हैं । आदमियों के समूह का नाम समाज है । समाज के लिए कितनी ही चीज़ों की ज़रूरत है । खाने को भोजन चाहिए, पहनने को कपड़े चाहिए, और रहने को मकान चाहिये । इसी तरह की और भी कई ज़रूरी चीज़ें चाहिए । इन चीज़ों को तैयार करने के लिए सब लोग कुछ न कुछ काम करते हैं । जब हम कोई काम करते हैं हमको दूसरों का ख्याल रखना पड़ता है ।

तुम अपने लाभ के लिए काम करते हो, यह तुम्हारा अधिकार है । लेकिन इसके लिए दूसरों को हानि न पहुंचाओ । दूसरे आदमी को उसका अधिकार दो, यह तुम्हारा कर्तव्य है ।

हम समाज में रहते हैं। हम सब इसके अंग हैं। हमारे देश में रहनेवाले सब इस देश के नागरिक हैं। इस देश के सारे नागरिक मिलकर राष्ट्र का काम चलाते हैं। राष्ट्र हमारा है और हम ही राष्ट्र हैं। राज्य के नियमों का हमको पालन करना चाहिए। हमको सबकी सेत्रा करनो चाहिए और सबकी भलाई के लिए काम करना चाहिए । यही अच्छे नागरिक की पहचान है।

अभ्यास

१. जवाब दो—

(१) तुम कैसे रहना चाहते हो ?

(२) समाज के लिए किन चीज़ों की ज़रूरत है ?

(३) अच्छे नागरिक का चिह्न क्या है ?

२. अर्थ बताकर, वाक्यों में प्रयोग करो—

मिल-जुलकर, भलाई, ख्याल करना।

पाठ १६ (सोलह)

दीपावली

रामचन्द्र—गोपाल, कल तुम्हारा स्कूल है कि नहीं ?

गोपाल—नहीं भाई, कल तो छुट्टी है ।

रामचन्द्र—कल किसलिए छुट्टी है ?

गोपाल—कल हम लोगों का त्योहार है ।

रामचन्द्र—कल कौन-सा त्योहार है ?

गोपाल—कल दीपावली है । दीपावली हम लोगों का बहुत बड़ा त्योहार है ।

रामचन्द्र—दीपावली तुम लोग कैसे मनाते हो ?

गोपाल—क्या तुमको दीपावली के बारे में कुछ भी मालूम नहीं है ? क्या उत्तर भारत में दीपावली नहीं मनाते ?

रामचन्द्र—उत्तर भारत में भी दीपावली मनाते हैं । लेकिन तुम पहले बताओ कि दक्षिण में लोग दीपावली कैसे मनाते हैं ।

गोपाल—दीपावली के दिन हम लोग सबेरे उठते हैं और तेल लगाकर स्नान करते हैं । स्नान करने के बाद नये कपड़े पहनते हैं ।

रामचंद्र—क्या दीपावली के दिन सब लोग नये कपड़े पहनते हैं ?

गोपाल—हाँ, उस दिन हमारे यहाँ सब लोग नये कपड़े पहनते हैं। उसके बाद नाश्ता करते हैं। दीपावली के दिन हम ज़रूर मीठी चीज़ें खाते हैं। फ़िर दोस्तों से मिलने जाते हैं।



रामचंद्र—और, दीपावली के दिन पटाखे भी छोड़ते हैं न ?

गोपाल—हाँ, हाँ, मैं भूल ही गया। उस दिन हम लोग खूब पटाखे छोड़ते हैं। अब तुम बताओ, उत्तर भारत में लोग दीपावली कैसे मनाते हैं ?

रामचंद्र—उत्तर भारत में दीपावली को दीवाली भी कहते हैं। उस दिन लोग अपने घरों को साफ़ करते हैं, चूने से पोतते हैं। दरवाज़ों और खिड़कियों में रंग लगाते हैं। घरों को सजाते हैं। रात में लक्ष्मी की पूजा करते हैं। फिर दीप जलाते हैं।

गोपाल—क्या सब लोग दीप जलाते हैं?

रामचंद्र—हाँ, उस दिन अमीर, ग़रीब सब लोग अपने-अपने घरों में दीप जलाते हैं। वे एक क़तार में बहुत से दीप सजाकर रखते हैं। दीवाली के दिन क़तार में रखे हुए दीप देखने में बड़े सुंदर लगते हैं।

गोपाल—क्या पटाखे नहीं छोड़ते?

रामचंद्र—कुछ लोग पटाखे भी छोड़ते हैं। पर ज्यादा लोग दीप ही जलाते हैं।

गोपाल—क्या उत्तर भारत के लोग उस दिन नये कपड़े भी पहनते हैं?

रामचंद्र—नहीं, दक्षिण की तरह उस दिन नये कपड़े पहनना ज़रूरी नहीं है। लेकिन जिसकी इच्छा हो वह पहनता है।

गोपाल—क्या तुम नाश्ते के लिए मेरे घर आओगे? वहाँ अपने देश के दूसरे त्योहारों के बारे में भी बात करेंगे।

रामचंद्र—हाँ, ज़रूर आऊँगा।

अभ्यास

१. खाली जगहों को भरो—

(१) उत्तर भारत में भी दीपावली — हैं।

(२) तुम दीपावली के दिन — छोड़ते हो ?

(३) दीपावली के दिन हम — करते हैं।

(४) उत्तर भारत में उस दिन लोग — जलाते हैं।

(५) उस दिन हम नये कपड़े भी — हैं।

२. नीचे के प्रयोगों को वाक्यों में इस्तेमाल करो—

चूने से पोतना, रंग लगाना, दीप जलाना, घर सजाना, रोशनी करना, त्योहार मनाना, तेल लगाना, पटाखा छोड़ना।

३. इन शब्दों को मिलाकर वाक्य बनाओ—

घर	मनाते हैं।
दीपावली	सजाते हैं।
तेल	छोड़ते हैं।
दीप	लगाते हैं।
पटाखे	जलाते हैं।
रोशनी	में रखते हैं।
क़तार	करते हैं।

पाठ १७ (सत्रह)

चमकते हीरे

छोटे-छोटे, प्यारे-प्यारे,
कैसे सुन्दर लगते तारे!
चम-चम-चम चमकते हीरे,
मोती-जैसे दमकते तारे।

नील गगन है इनका घर,
जहाँ खेलते ये बिखर-बिखर
इनको कोई पकड़ न पाते,
सबका ये जी ललचाते।

चन्दा के हैं ये सब चेले,
छिप जाते हैं ये बड़े सबेरे;
जहाँ घना रहता है अंधियारा,
करते वहाँ हैं ये उजियारा,

जी में आता उन्हें लाऊँ,
लाकर माला इनकी बनाऊँ
भारत माँ को उससे सजाऊँ,
माँ को सादर शीश झुकाऊँ।

अभ्यास

१. जवाब दो—

(१) तारे कैसे लगते हैं?
(२) ये कब छिप जाते हैं ?
(३) कवि के जी में क्या आता है?

२. इस पद्य को जबानी सुनाओ।

३. पद्य पूरा करो—

(१) नील गगन है — जी ललचाते।
(२) जहाँ घना — ये उजियारा।
(३) जी में आता — शीश झुकाऊँ।

61,4639

पाठ १८ (अठारह)

सम्राट अशोक

सम्राट अशोक हिन्दुस्तान के बहुत बड़े राजा थे। ये मौर्य-वंश में उत्पन्न हुए थे और इनके पिता का नाम बिन्दुसार था। इनकी राजधानी बिहार प्रांत में पाटलीपुत्र नामक नगर में थी। उसका नाम आजकल पाटना हो गया।

सम्राट अशोक ने गद्दी पर बैठते ही अपने राज्य को बढ़ाना शुरू कर दिया। उन्होंने कलिंग (वर्तमान उड़ीसा) देश पर चढ़ाई की। कलिंग का राजा भी बड़ा वीर और प्रतापी था। दोनों में बड़ा भयंकर युद्ध हुआ। उसमें एक लाख आदमी मारे गये। युद्ध के बाद देश में भयंकर अकाल पड़ा जिसमें कई लाख आदमी भूखों मरे।

अशोक ने इस नर-संहार को देखा, तो उसका दिल दया से भर गया। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि मैं अब कभी युद्ध नहीं करूँगा। फिर उन्होंने युद्ध कभी नहीं किया।

उस समय हमारे देश में बौद्ध धर्म का खूब प्रचार था। भगवान बुद्ध ने उस धर्म को चलाया था। वे पूरे अहिंसावादी थे। सबको सत्य, दया और अहिंसा का

उपदेश देते थे। कई लोग उनका उपदेश सुनकर बौद्ध धर्म में शामिल हो गये।

महाराज अशोक को बौद्ध धर्म बहुत अच्छा लगा और उन्होंने उस धर्म को स्वीकार कर लिया। उसके बाद उन्होंने बौद्ध धर्म का प्रचार करना भी शुरू किया। उन्होंने बहुत-से भिक्षुओं को धर्म-प्रचार के लिए सारे भारतवर्ष में भेजा। अशोक ने धर्म-प्रचार के लिए भिक्षुओं के साथ अपनी पुत्री संघमित्रा को भी लंका भेजा। उन भिक्षुओं ने दुनिया के सभी लोगों को शांति और अहिंसा का पाठ पढ़ाया। इसलिए दुनिया में आज तक अशोक का नाम प्रसिद्ध है।

भारत के राष्ट्रीय झंडे पर अशोक-चक्र का चिह्न है। यह चिह्न पहले अशोक ने ही चलाया था और उसका नाम 'धर्मचक्र' था।

अभ्यास

१. खाली जगहों को भरो —

(१) युद्ध — — देश में भयंकर — पड़ा।

(२) भगवान बुद्ध ने उस — को — था।

(३) सबको सत्य, — और — का उपदेश देते थे।

(४) भारत के — झंडे पर अशोक-चक्र का —है।

२. जवाब दो—

(१) सम्राट अशोक कौन थे और उनकी राजधानी कहाँ थी ?

(२) अशोक का दिल दया से क्यों भर गया ?

(३) अशोक ने धर्म-प्रचार के लिए क्या-क्या किया ?

पाठ १९ (उन्नीस)

तानसेन

तुमने अकबर बादशाह का नाम सुना है ? वह बड़ा बहादुर बादशाह था । वह विद्वानों और कलाकारों का बड़ा आदर करता था । उसके दरबार में कई अच्छे विद्वान और कलाकार रहते थें । उन्हीं में से तानसेन एक था । तानसेन बहुत बड़ा गवैया था ।

तानसेन जानवरों और दूसरे मनुष्यों की बोली की नकल करने में बड़ा चतुर था । वह बहुत अच्छा नकल करता था । कोई यह पहचान न सकता था कि उसकी आवाज़ नकली है या असली । उसकी आवाज़ सुरीली और मीठी थी ।

उसके बाप का एक आम का बगीचा था । उसमें चोर घुसकर रात में आम तोड़ लेते थे ; इसलिए पिता ने बगीचे की रखवाली के लिए तानसेन को नियुक्त किया था । तानसेन रोज़ रात को बाग में ही सोता था । वह शेर की तरह ज़ोर से गरजता, तो चोर डर के मारे भाग जाते थे ।

एक दिन शाम को कुछ साधु वहाँ आये । पेड़ों की ठंडी छाया देखकर वे लोग आराम करने के लिए बगीचे

में घुसे । उन्हें देखकर तानसेन शेर की तरह गरजने लगा । उसकी आवाज़ सुनकर साधु डर गये । पर उनमें एक साधु हिम्मतवाला था । उसने कहा—"भला, आम के बग़ीचे में शेर कहाँ से आएगा ।"



वह साधु हिम्मत करके बाग में घुस गया । वहाँ जाकर उसने एक लड़के को झाड़ियों में बैठे देखा । उसे देखकर साधु को बड़ा अचरज हुआ । उसने लड़के से पूछा—"अजी, यहाँ शेर गरज रहा है, तुम क्या कर रहे हो ? "

लड़के ने कहा—"बाबा, यहाँ कोई शेर नहीं है, मैं ही शेर-जैसा गरज रहा हूँ ।"

साधु उस लड़के को अपने गुरु हरिदासजी के पास ले गया और हरिदासजी ने उसको पढ़ना-लिखना सिखाया । हरिदास संगीत विद्या के बड़े आचार्य थे ।

उन्होंने उस लड़के को संगीत सिखाया । थोड़े ही दिनों में लड़के ने गाना खूब सीख लिया । उसका गला इतना मीठा और संगीत इतना बढ़िया था कि कुछ ही दिनों में उसकी कीर्ति दूर-दूर तक फैल गयी । उसकी कीर्ति सुनकर अकबर बादशाह ने उसे अपने दरबार में बुला भेजा । तब तक वह युवक गवैया 'तानसेन' के नाम से मशहूर हो गया था ।

अकबर को भी गाने का बड़ा शौक़ था । जब उस तानसेन का गाना सुना, तो उन्हें अपने पास रख लिया । कहते हैं कि जब तानसेन 'दीपक' राग गाते थे, तो दीप अपने आप जलता था और 'मलार' गाते, तो पानी बरसता था ।

अभ्यास

१. जवाब दो—

(१) अकबर कैसे बादशाह थे ?

(२) तानसेन कौन था ?

(३) उसका गला कैसा था और वह किस तरह नक़ल करता था ?

(४) चोर क्यों डर के मारे भाग जाता था ?

(५) तानसेन का नाम कैसे मशहूर हुआ ?

२. लिंग बताकर वाक्यों में प्रयोग करो—

आदर, आवाज़, रखवाली, छाया, अचरज, दरबार ।

पाठ २० (बीस)

प्रिय देश

तेरा रूप अनूप निहार,
पाता हूँ आनन्द अपार,
देता हूँ तन-मन को वार।
हे मेरे प्रिय देश !

एक-एक से निकले वीर,
तेरे पुत्र बड़े रणधीर,
हरी जिन्होंने तेरी पीर,
हे मेरे प्रिय देश !

ज्ञानी हुए एक से एक,
विद्यासागर हुए अनेक,
रखे जिन्होंने अपनी टेक,
हे मेरे प्रिय देश !

तेरी मिट्टी, तेरा पानी,
फल औ' फूल बड़े लासानी,
मुझे बनाते हैं अभिमानी,
हे मेरे प्रिय देश !

'शिव'

पाठ २१ (इक्कीस)

बापू और साँप



गांधीजी निडर आदमी थे। वे जिन्दगी-भर कभी किसी से नहीं डरे। वे कहा करते थे—"भय ही मनुष्य का बड़ा दुश्मन है। भय के कारण ही भारत गुलाम हो गया था। इसलिए इस भय के भूत को भगा दो।"

सन् १९१७ की बात है। गांधीजी आश्रम में शाम की प्रार्थना के बाद अपने बिस्तर पर बैठे थे। जाड़े के दिन थे, इसलिए कस्तूरबा ने एक चादर दोहरी करके उनकी

पीठ पर डाल दी थी । बापू आश्रमवासी श्री रावजी भाई पटेल से बातें कर रहे थे । रावजी भाई को बापू की चादर पर एक काली लकीर-सी दिखायी दी । गौर से देखा तो मालूम हुआ, एक छोटा साँप पीछे से आकर बापू के कंधे तक पहुंच गया है । रावजी भाई को अपने कंधे की ओर ताकते देखकर बापू ने पूछा—"क्या है रावजी भाई ?"

बापू को भी ऐसा लग रहा था कि पीठ पर कुछ भार है । रावजी भाई का मन जल्दी घबड़ानेवाला न था । उनमें तुरंत निर्णय करने की शक्ति आ गयी थी । उन्होंने सोचा कि जोर से कहूँगा, तो सब लोग घबरा जाएँगे और साँप भी भड़क उठेगा । उन्होंने धीमी आवाज में कहा—"कुछ नहीं बापू, एक साँप आपकी पीठ पर है । आप बिलकुल स्थिर रहें ।"

बापू ने कहा—"मैं बिलकुल स्थिर रहूँगा । लेकिन तुम क्या करना चाहते हो ?"

रावजी भाई ने कहा—"मैं चादर के चारों कोने पकड़कर साँप के साथ उसे उतार दूँगा ।"

बापू ने कहा—"मैं तो निश्चेष्ट बैठूँगा, लेकिन तुम सँभालना ।"

रावजी भाई ने चादर उठायी और उसे दूर ले गये। सांप जैसे ही चादर से बाहर निकला, उसे दूर फेंक दिया। इस घटना से चारों ओर सनसनी पैदा हो गयी। अखबारवालों को अच्छा मसाला मिल गया। दूसरे दिन अखबारों में समाचार प्रकट हुआ—"कल शाम को गांधीजी प्रार्थना कर रहे थे। इतने में एक सुनहले रंग के सांप ने आकर बापू के सिर पर फन फैलाया था।"

कुछ लोग कहने लगे हैं कि सांप उनके कंधे तक ही चढ़ा था। अगर सिर तक चढ़ता, तो जरूर वे हिन्दुस्तान के चक्रवर्ती सम्राट हो जाते।

एक दिन इस घटना का जिक्र होने पर एक आश्रमवासी ने गांधीजी से पूछा—"जब सांप आपके शरीर पर चढ़ा, तब आपके मन में क्या-क्या हुआ?"

बापू बोले—"एक क्षण के लिए तो मैं घबरा गया था। लेकिन सिर्फ एक ही क्षण के लिए। बाद में तो तुरंत संभल गया। फिर विचार आने लगे कि अगर इस सांप ने मुझे काटा, तो भी मैं सबसे यही कहूंगा—कम से कम इसे मत मारो।"

अभ्यास

जवाब दो —

(१) गाँधीजी ने हमारी गुलामी का क्या कारण बताया ?

(२) रावजी भाई ने गाँधीजी के कंधे पर क्या देखा ?

(३) उन्होंने गाँधीजी से क्या कहा और गांधीजी ने क्या किया ?

(४) साँप कैसे बाहर फ़ेंक दिया गया ?

पाठ २२ (बाईस)

सुलताना चाँद

उत्तर हिन्दुस्तान में मुगल बादशाह अकबर राज्य कर रहे थे। उन्हीं दिनों में दक्षिण में एक बहादुर औरत चाँद बीबी बिजापुर के तख्त पर बैठी। वह 'सुलताना चाँद' के नाम से मशहूर थी। वह राज-काज अच्छी तरह सँभालती थी। दरबार में बैठकर न्याय करती थी। उसके राज्य में कोई दुखी नहीं था।

चाँद अहमदनगर के बादशाह निजामशाह की बेटी थी। बचपन से ही उसे राज-काज करने का शौक़ था। वह अपने बाप के साथ दरबार में बैठा करती थी। वह कभी परदा नहीं करती। घोड़े पर सवारी भी करती थी। वह पढ़ी-लिखी थी और सुंदरी भी थी। चाँद की शादी बिजापुर के बादशाह अली आदिल के साथ हुई। लेकिन ज़्यादा दिन तक वह आदिल के साथ नहीं रह सकी ; क्योंकि आदिल एक-दो साल के अंदर ही गुज़र गया। इसके बाद चाँद बिजापुर के राज्य का खुद शासन करने लगी।

जब चाँद सिंहासन पर बैठी, तो आसपास की रियासत बिजापुर को हड़पने का मौक़ा देखने लगीं। मुग़ल बादशाह अकबर भी दक्षिण को अपने राज्य में मिला

घेने की कोशिश करने लगे । यह सुनकर चाँद न अपनी फ़ौज का संगठन किया । सारी प्रजा चाँद के नाम पर खुशी से मर मिटने के लिए तैयार हो गयी ।

एक बार अकबर के लड़के मुराद ने अहमदनगर पर चढ़ाई की । उसकी फ़ौज ने रियासत के गावों को लूटना शुरू कर दिया । यह खबर चाँद को मिली, तो वह घोड़े पर सवार होकर अपने कुछ सिपाहियों को साथ लेकर अहमदनगर आ पहुँची । अहमदनगर पहुंचते ही उसने किले के ऊपर से गोलाबारी शुरू की, तो मुराद की फ़ौज घबड़ा उठी । फिर भी मुराद ने अपनी सारी फ़ौज को इकट्ठा किया । उन्होंने क़िले की एक दीवार को सुरंग लगाकर बारूद से उड़ा दिया । चाँद ने रातों-रात उस टूटी हुई दीवार की मरम्मत करवा दी । फिर उसके चारों तरफ़ तोपें चढ़वा दीं । यह देखकर मुराद की हिम्मत टूट गयी और उसकी फ़ौज डरकर भाग गयी ।

चाँदबीबी का नाम हिन्दुस्तान के इतिहास में अमर हो गया है ।

अभ्यास

जवाब दो—

(१) चाँद बीबी कौन थी ?
(२) उसे किस बात का शौक़ था ?
(३) वह कब से बिजापुर राज्य का शासन करने लगी ?
(४) अकबर बादशाह क्या करने लगे ?
(५) चांदबीबी का नाम इतिहास में कैसे अमर हो गया ?

पाठ २३ (तेईस)

आओ, मिलकर गायें गीत



आओ, मिलकर गायें गीत ।
हिन्दू, मुसलिम, सिख, ईसाई,
आपस में हैं भाई-भाई ।
ना झगड़ा, ना कोई लड़ाई,
प्रेम की कैसी प्यारी रीत ।
आओ, मिलकर गायें गीत ।

आओ प्रेम की जोत जलायें,
बिछड़ों को आपस में मिलायें,
बैर मिटायें, प्रेम बढ़ायें,
सबको कर लें अपना मीत ।
आओ, मिलकर गायें गीत ।

सेवा अपना ढंग बनायें,
दुखियों का दुख-दर्द मिटाय,
देश की बिगड़ी बात बनायें,
सेवा की है जग में जीत।
आओ मिलकर गायें गीत।

भारत माता के काम आयें,
दुख की कैद से उसको छुडायें,
आजादी लें या मर जायें,
फिर सुख-चैन के गायें गीत
आओ, मिलकर गायें गीत।

"फिराक"

अभ्यास

१. यह पद्य जबानी सुनाओ।
२. पूरे वाक्य बनाओ—
आपस में, बैर मिटायेंगे, बिछुड़ों को मिलायेंगे, सबको अपना कर लेंगे, सेवा करेंगे, दुख-दर्द मिटाना चाहिये, बिगड़ी बात बनाओ, काम आयें, आज़ादी लेंगे।

———

61|4689

पाठ २४ (चौबीस)
ईमानदार लड़का



नेपोलियन फ्राँस का बड़ा बहादुर बादशाह था। पहले वह बहुत ग़रीब था। बचपन में वह गाँव की एक पाठशाला में पढ़ता था। उस ` दोस्त उसकी मदद करते थे।

उसके मदरसे के पास एक औरत फल बेचा करती थी। नेपोलियन उस औरत से फल खरीदता था। कभी-कभी उसके पास पैसा नहीं रहता था। वह औरत नेपोलियन को फल उधार दे देती थी। कुछ दिन के बाद उसने पढ़ना छोड़ दिया। जाकर फ़ौज में भर्ती हो गया। उसकी बड़ी तरक्की हुई। वह अफ़सर हुआ। फिर फ्राँस का बादशाह भी बन गया।

एक रोज फ्राँस का बादशाह नेपोलियन घूमत-घूमते उसी म.रसे के पास आया। उसको पुरानी बातें याद आयीं। वह रुक गया। जाकर लोगों से पूछा—"यहाँ एक औरत फल बेचा करती थी। अब वह कहाँ रहती है?" लोगों ने उस औरत का पता बताया। नेपोलियन चुपचाप उस गली में पहुँचा। औरत क पास जाकर उसने पूछा—"मुझे पहचानती हो?"

औरत ने अचरज से कहा—"नहीं, मैं तुमको नहीं पहचानती। तुम क्या चाहते हो?"

नेपोलियन—"पहले तुम फल बेचती थीं न? और उस मदरसे क पास बठती थीं न?"

औरत—"हाँ, इससे तुम्हारा क्या मतलब?"

नेपोलियन—"एक लड़का तुमसे फल खरीदता था। वह गरीब था। कभी-कभी उधार भी लेता था।"

औरत—"बहुत-से लड़के फल खरीदते थे। मुझे याद नहीं कि कौन ग़रीब था, कौन उधार लेता था। लेकिन तुम ये बातें क्यों पूछते हो?"

नेपोलियन—"मैं वही ग़रीब लड़का हूँ। तुम्हारा उधार चुकाने आया हूँ। बोलो, कितना बाक़ी है तुम्हारा?"

औरत—"मुझे कुछ भी याद नहीं है। लेकिन तुम्हारी बोली मैं पहचानती हूँ। तुम बड़े ही नटखट थे, लेकिन, दस बरस की बात लेकर तुम यहाँ क्यों आये हो? जाओ, मेरा कुछ भी बाकी नहीं। तुम खुश रहो।"

नेपोलियन ने अपनी जेब से मुट्ठी-भर मुहरें निकाली और उस औरत के हाथ में रख कर चला गया। बुढ़िया अचरज से देखती रही।

उसी समय कुछ लोगों ने आकर कहा—"बुढ़िया! फ्रांस के बादशाह तुम्हारे घर आये थे!"

बुढ़िया के मुँह से निकल पड़ा—"कैसा ईमानदार लड़का है!"

अभ्यास

१. जवाब दो—

(१) नेपोलियन बचपन में कैसा था?

(२) औरत क्या करती थी?

(३) नेपोलियन कैसे फ्रांस का बादशाह बन गया?

(४) उसने लोगों से क्या पूछा?

(५) बुढ़िया क्यों अचरज से देखती रही?

२. अर्थ और लिंग बताओ—

बचपन, मदद, तरक्की, मदरसा, जेब, मुहर, अचरज।

पाठ २५ (पच्चीस)

पिरामिड

बालको ! आज हम आफ्रिका के उत्तर प्रान्त में हैं। तुम जानते हो, इस प्रदेश का नाम क्या है ?

मिश्र देश, मास्टरजी !

उधर देखो ! पहाड़ की तरह त्रिकोण आकार में क्या दिखायी देते हैं ? उनका नाम जानते हो ?

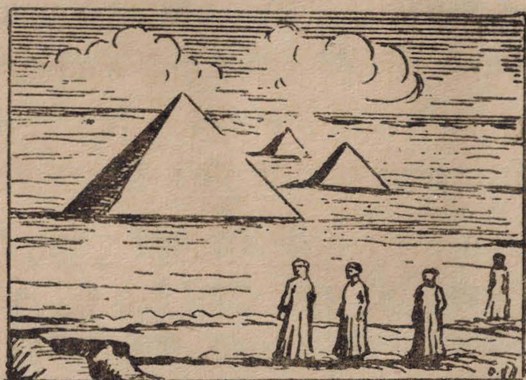
हमने भूगोल-शास्त्र में इनका चित्र देखा है पंडितजी। इनका नाम पिरामिड है।

बिलकुल ठीक। मिश्र देश बहुत पुराना है और इसकी सभ्यता भी बहुत पुरानी है। यहाँ के लोग इमारत बनाने में बड़े होशियार थे। पिरामिड इन्हीं मिश्र-वासियों की पुरानी कारीगरी के नमूने हैं। यहाँ के प्राचीन राजाओं ने अपनी समाधि के लिए इनका निर्माण कराया था।

मिश्र देश में भिन्न-भिन्न स्थानों में कुल ७५ पिरामिड हैं। इनमें गीजेह नामक स्थान में जो पिरामिड है, वह सबसे बड़ा और अद्भुत है। इसके समान अद्भुत वस्तु दुनियाँ में बहुत कम है। इस इमारत को ४००० वर्ष

पहले मिश्र देश के चूफू नामक राजा ने बनवाया । इसकी विशालता चार लाख अस्सी हज़ार फ़ीट है और इसके बनाने में दो लाख मनुष्यों को बीस वर्ष तक काम करना पड़ा ।

यहाँ के सभी पिरामिड एक ही आकार के हैं । कुछ बड़े हैं, कुछ छोटे हैं, इतना ही फ़र्क है ।



हम अब अंदर जाकर देखें । देखो, इसमें कितने कमरे हैं ! बीच के कमरे में राजा का समाधि-स्थान है. समाधि में राजा के शव के साथ उसके सारे अस्त्र-शस्त्र, गहने, कपड़े, बर्तन भी रखे हैं । मिश्रियों का विश्वास था कि एक दिन वह राजा उठेगा और इन वस्तुओं का उपयोग करेगा ।

राजा का भी यही विश्वास था। इसलिए जब कोई राजा गद्दी पर बैठता, तभी से पिरामिड बनवाने की चिंता में पड़ जाता। वह अपनी सारी आमदनी पिरामिड बनवाने में खर्च करता था। वह समझता था कि पिरामिड बनवाना एक महत्वपूर्ण कार्य है।

अभ्यास

जवाब दो—

(१) आफ्रिका के उत्तर प्रान्त में कौन-सा देश है ?

(२) पिरामिड क्या है ?

(३) गीजेह पिरामिड बनाने में कितने लोगों को कब तक काम करना पड़ा ?

(४) पिरामिड बनाने का उद्देश्य क्या था ?

पाठ २६ (छब्बीस)

परोपकार

सरिता, निर्झर अपने जल से
अपनी प्यास बुझाते क्या ?
अपने पत्रों की छाया में
वृक्ष थकान मिटाते क्या ?

पेड़ उन्हें क्या खाया करते
जो फल उनपर लगते हैं ?
क्या निज को प्रकाश दिखलाते
वे दीपक जो जगते हैं ?

क्या अपने को सुख पहुंचाते
हैं सुगंध से सुंदर फूल ?
अपने को ही ठंडक देता–
है क्या सरिता का शुभ कूल ?

नहीं, नहीं दिनकर परहित ही
अपना गात जलाता है,
खेत अन्न उपजाते, सरिता
का जल बहता जाता है।

परोपकार के लिए वृक्ष भा
फल का बोझ उठाते हैं,
सज्जन जन भी, सुख में दुख में,
काम सभी के आते हैं !

—श्री नगीनचन्द प्रदीप

अभ्यास

जवाब दो—

(१) सरिता, वृक्ष, फूल, और खेत परहित क लिए ्या करते हैं ?

(२) सज्जन कैसे काम आते हैं ?

पाठ २७ (सत्ताईस)

श्री शंकराचार्य



संसार में सबसे पुराना धर्म हिन्दू धर्म है । इस धर्म को मजबूत बनाने और बढ़ाने में दक्षिण के चार महान आचार्यों ने बड़ा काम किया है । इनमें श्री शंकराचार्य का काम सब से अधिक महत्वपूर्ण था । उन्होंने काश्मीर से कन्याकुमारी तक घूमकर अपने हिन्दू वैदिक धर्म का प्रचार किया और हिन्दू धर्म को नया रूप दिया ।

श्री शंकराचार्य केरल प्रदेश के कालड़ी के रहनेवाले थे । उनका जन्म एक प्रतिष्टित परिवार में हुआ था । उनके पिता का नाम शिवगुरु और माता का नाम अंबिका था ।

शंकर बचपन से ही बड़े अक्लमंद थे । कोई भी पाठ एक बार पढ़ते तो उन्हें वह अच्छी तरह याद हो जाता था । उन्होंने छुटपन में ही संस्कृत भाषा में बड़ी योग्यता प्राप्त कर ली । अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने संन्यास ले लिया । उनकी माता को शंकर का यह काम बिलकुल पसंद नहीं आया । लेकिन शंकर अपनी धुन के पक्के थे ।

श्री शंकर ने सारे भारत में घूमकर वैदिक धर्म के संबन्ध में व्याख्यान देना शुरू किया । उस समय देश में जैन और बौद्ध धर्मों का बहुत प्रचार था । इन दोनों धर्मों में भी बड़े-बड़े विद्वान थे । इन धर्मों के विद्वानों से कई जगह पर श्री शंकराचार्य ने बहस की ।

जहाँ-जहाँ बौद्ध व जैन विद्वान मिलते उनसे बहस करते और उनको हरा देते । जो विद्वान हार जाते वे उनके शिष्य बन जाते । इस तरह उन्होंने हजारों विद्वानों को अपने शिष्य बना लिया ।

श्री शंकराचार्य ने वेदान्त, भक्ति, ज्ञान आदि महत्वपूर्ण विषयों पर कई ग्रंथ लिखे। उनके ग्रंथ अब भी बड़े चाव से पढ़े जाते हैं। उन्होंने कई राजा-महाराजाओं को भी अपने शिष्य बनाया। उन्होंने देश के कई भागों में कई मठ स्थापित किये। तुंगभद्रा नदी के किनारे श्रृंगेरी में जो मठ है वह उनका प्रधान मठ कहलाता है। हिन्दुस्तान के पश्चिम में द्वारका, पूर्व में पुरी, दक्षिण में कांची, उत्तर में बद्रीनाथ आदि स्थानों में भी उन्होंने मठ स्थापित किये जो अब भी शंकराचार्य-मठ के नाम से चल रहे हैं।

लगातार भ्रमण कर बड़ी मेहनत के साथ धर्म और सिद्धान्त के प्रचार में अपना जीवन बिताकर श्री शंकराचार्य ने केदारनाथ में अपना शरीर छोड़ा। मृत्यु के समय श्री शंकराचार्य की उम्र सिर्फ़ ३२ साल की थी।

अभ्यास

जवाब दो—

(१) श्री शंकराचार्य कहाँ के रहनेवाले थे और वह स्थान कहाँ है?

(२) श्री शंकराचाय का विचार क्या था?

(३) श्री शंकराचार्य का भारत में भ्रमण करने का उद्देश्य क्या था ?

(४) श्री शंकराचार्य का प्रधान मठ कहाँ है ?

(५) श्री शंकराचार्य ने कहाँ-कहाँ मठ स्थापित किये ?

पाठ २८ (अट्ठाईस)

बड़ा कौन है ?

बड़ा कौन है ? मुझे बताओ,
क्या जो हाथों पर चढ़ता है ?
या जो चतुराई से अपनी
भूल दूसरों पर मढ़ता है ! १

बड़ा कौन है ? वह अमीर क्या,
जिसके पास बड़ी दौलत है ?
और गरीबों, मुहताजों से
जिसको उतनी ही नफ़रत है ! २

बड़ा कौन है ? कमज़ोरों पर
क्या जो जुल्म किया करता है ?
डाह और कीना दिल में रख
जलता हुआ जिया करता है ? ३

बड़ा कौन है ? क्या वह जिसका
ताकतवर या सुन्दर तन है ?
लेकिन जांच करो, कैसा
डरपोक और बदसूरत मन है ! ४

बड़ा कौन है ? क्या खुशामदी
घेरे जिसे रहा करते हैं ?
पूछो, वे उसको, या उसके
धन को, बड़ा कहा करते हैं ! ५

बड़ा कौन है : क्या वह है, जो
बातें बड़ी बड़ी कहता है !
किन्तु काम करनेवालों में
उसका नाम नहीं रहता है । ६

नहीं, नहीं, ये बड़े नहीं हैं,
ये तो बहुत गये-बीते हैं ।
ये ता सदा दूसरों ही के
दुख से सुख लेकर जीते हैं । ७

ज्ञान, स्वास्थ्य, सुख और बात भी
जिनको ये अपना कहते हैं ।
सब औरों के दिये हुए हैं ,
वे मुहताज सदा रहते हैं । ८

तब फिर कौन बड़ा है ? बेशक
इस सवाल का जवाब यहीं है ।

जो सेवा करता है सबकी,
बड़ा वही है, बड़ा वही है।

सूरज क्या इसलिये बड़ा है
कि वह ऊँचाई पर रहता है ?
नहीं ; रोशनी वह देता है,
तब संसार बड़ा कहता है।

———

PRINTED BY THE S.G.P. AT THE GOVERNMENT P
TRIVANDRUM, 1961.